BA - II Subsidary - (A) (D) 45

महाराष्ट्रीय काव्य साहित्य

Q (1)- कंसवहो की कथावस्तु संक्षेप में प्रस्तुत करें।

कंसवहो कथा काव्य के रचयिता राम पाणिवाद है। उन्होंने कंसवहो नामक खण्ड काव्य मे चार सर्ग और 233 पद्य बताया गया है।

कंसवहो कथा के प्रारंभ करते हुए कहते है कि एक श्रीकृष्ण अपने बड़े भाई बलराम के साथ सायंकाल के समय व्रज में चंक्रमण कर रहे थे। उसी समय गान्दिनी पुत्र अक्रूर उनके पास आया। कृष्ण ने उसका स्वागत किया और अक्रूर ने उनकी स्तुति की। अनन्तर उसने दुःख से साथ प्रकट किया कि मथुरा मे कंस छल से उन्हे मारने का कूट-जाल रच रहा है और उसी लिए उसने श्रीकृष्ण को धनुष यज्ञ का निमन्त्रण भेजा है। बलराम को धनुष यज्ञ देखने का कौतुक उत्पन्न हुआ। किन्तु साथ ही उक्त कपटजाल के कारण उनके मन में भय भी उत्पन्न हुआ। श्री कृष्ण ने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और अक्रूर के साथ ही जाने का निश्चय किया। प्रस्थान के समय उन्हे रथारूढ देखकर गोपियाँ विलाप करने लगी। अक्रूर ने उन्हे आश्वासन दिया कि कृष्ण उन्हे सदा के लिए छोड़कर नही जा रहा है, अक्रूर बल्कि एक महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध कर के पुनः उनसे आकर मिलेगे। तत्पश्चात कृष्ण और बलराम अपने परिजनो सहित चलकर यमुना के तीर पर आये और वहाँ स्नान कर मथुरा मे प्रविष्ट हुए।

कृष्ण और बलराम राजमार्ग से जा रहे थे। उन्हे कंस का धोबी मिला, जिससे उन्होने कुछ

वस्त्रों की याचना की। उत्तर में उसका व्यवहार कटु पाकर कुपित हो गये। श्रीकृष्ण ने इसे पछाड़ दिया, जिससे उसके प्राण पखेरू उड़ गये। कुछ और दूर आगे बढ़ने पर उन्हें कंस की कुब्जा शिल्पकारिका दासी मिली, जो कंस के लिए केशर, चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थ ले जा रही थी। उसने हर्ष और विनयपूर्वक वे केशर-चन्दन आदि सभी पदार्थ कृष्ण को अर्पण किये। प्रसन्न होकर कृष्ण ने उसके कुब्जा को छू दिया, जिससे उसका कुबड़ापन दूर हो गया और वह एक सुन्दर युवती बन गयी। उसने कृष्ण से प्रेम की भिक्षा माँगी, जिसे उन्होंने यह कहकर टाल दिया कि अभी इसके लिए अवकाश नहीं है, फिर देखा जायगा। वहाँ से चलकर वे धनुषशाला में प्रविष्ट हुए और वहाँ रखे हुए धनुष को तोड़कर फेंक दिया। रक्षकों के विरोध करने पर उन्होंने उन्हें यमगेह का अतिथि बना दिया। अनन्तर वे मथुरा नगरी की शोभा देखने लगे। सन्ध्या समय वे अपने निवास स्थान पर लौट आये।

प्रातः काल होने पर वन्दीजनों ने प्रभात वर्णन एवं स्तुति पाठ द्वारा श्रीकृष्ण को जगाया। कृष्ण और बलराम प्रातः-क्रियाओं से निवृत्त होकर पुनः नगर की ओर चल पड़े। नगर द्वार पर अम्बष्ठ ने कुवलयापीड नामक उन्मत्त हाथी उनको रोकने के लिए खड़ा कर दिया था। कृष्ण ने उस हाथी को भी पछाड़ा और अम्बष्ठ को भी। आगे चलने पर चाणूर और मुष्टिक नामक मल्ल मिले, जिन्हें कृष्ण और बलराम ने मल्लयुद्ध करके स्वर्ग पहुँचा दिया। इस समाचार से क्रुद्ध होकर कंस स्वयं ढाल, तलवार लेकर बढ़ा ही था कि तत्क्षण ही कृष्ण ने उसे पछाड़ कर अपने खड्ग द्वारा उसका नामशेष कर दिया

कंस की मृत्यु से समस्त जनता को आनन्द और सन्तोष हुआ। कृष्ण ने उग्रसेन को भोज और अन्धकों का चक्रवर्ती बनाया और अपने माता-पिता वसुदेव और देवकी को बन्दीगृह से छुड़ाया। पिता ने स्नेह से गद्गद होकर उन्हें आशीर्वाद दिया। अक्रूर ने स्तुति के रूप में कृष्ण की समस्त लीला का वर्णन किया, जिसे सुनकर कृष्ण के माता-पिता अत्यन्त प्रसन्न हुए।